

# घंटीनुमा घोंसले बनाती जल मकड़ी

संध्या रायचौधरी

कई मकड़ियां पानी में रहती हैं। यह एक ऐसी मकड़ी है जो पूरे जीवन पानी के भीतर रहती है। उसके गलफड़े नहीं होते लेकिन वह पानी के भीतर रहकर आसानी से सांस ले सकती है। सांस लेने के लिए वह अपने घोंसले से पानी



देने के लिए घोंसला बनाने की जद्दोजहद में उलझी रहती है। मादा जल मकड़ी अपने घोंसलों में मौजूद अंडों को सांस लेने के लिए हवा उपलब्ध कराने के लिए लगातार प्रयासरत रहती है, इस वजह से उसे पानी की सतह से कई बार ऊपर आना

की सतह पर आकर हवा के बुलबुले इकट्ठा करके पानी के अंदर ले जाती है और ज़रूरत होने पर इन बुलबुलों में मौजूद हवा में सांस लेती है।

जल मकड़ी (*आर्जिरोनेटा एक्वेटिका*) के शरीर पर बारीक बाल होते हैं, जिनमें वह हवा कैद कर लेती है। इनके माध्यम से वह पानी की गहराई में जाकर सांस लेती है। जलीय मकड़ी पानी की ऊपरी सतह पर वेल्वेट ग्रे रंग की दिखाई देती है। लेकिन पानी में जाने पर इसके शरीर के इर्द-गिर्द मौजूद हवा के कारण यह सुनहरे रंग की दिखाई देती है।

यह तालाबों, मंद गति से बहने वाले झरनों, कम गहराई वाली झीलों में पाई जाती है। यह अधिकतर वहां रहना पसंद करती है जहां पानी में पौधों की भरमार होती है।

यह उन गिनी-चुनी मकड़ियों में से है जिनमें नर मकड़ी मादा मकड़ी से बड़ी होती है। नर जल मकड़ी की लंबाई 7.8 से 18.7 मिलीमीटर होती है जबकि मादा जल मकड़ी 7.8 से 13.1 मिलीमीटर लंबी होती है। नर जल मकड़ी शिकार के लिए लंबे समय तक पानी में सक्रिय रहती है। जिसके कारण यह मादा की तुलना में ज्यादा लंबी होती है। इसके अलावा ऐसा माना जाता है कि मादा जल मकड़ी अंडे

पड़ता है। मादा जल मकड़ी की तुलना में नर जल मकड़ी की आगे की दो टांगें बड़ी होती हैं। इस कारण वह पानी में लंबी दूरी की छलांग लगा सकने में सक्षम होती है।

जल मकड़ी दिन के समय हवा के बुलबुले वाले अपने घोंसले में रहती है। इस समय इसके आगे के दो पैर घंटीनुमा घोंसले के बाहर निकले रहते हैं। शिकार जैसे ही इसके पास से गुज़रता है, वह अचानक अपने घोंसले से बाहर आती है, उसे झपटकर पकड़ लेती है और वापिस घोंसले के भीतर आ जाती है।

जल मकड़ी के घोंसले के रेशम के धागे इसे शिकार करने में विशेष सहयोग करते हैं। ये धागे जलीय पौधों की शाखाओं तथा इनके आस-पास तक फैले रहते हैं। अतः जैसे ही कोई शिकार इससे टकराता है जल मकड़ी को इसकी सूचना मिल जाती है और वह तेज़ी से आकर शिकार को दबोच लेती है तथा घोंसले में ले जाकर आराम से खाती है। जल मकड़ी निहायत संवेदनशील होती है। इसे पानी में होने वाली साधारण-सी हलचल का भी तुरंत पता चल जाता है। अतः यदि दिन के समय कभी कोई जीव पानी की सतह पर गिरता है, तो वह सतह पर आकर उसे तुरंत पकड़ लेती है।

जल मकड़ी दिन के समय तो अपने घोंसले में रहती है किंतु रात होते ही शिकार की खोज में बाहर निकलती है। इसकी भोजन सम्बंधी प्रमुख विशेषता यह है कि यह शिकार दिन में करे अथवा रात में, अपने घोंसले के पास करे अथवा दूर करे, सभी स्थितियों में यह अपने शिकार को घोंसले में ही लाकर खाती है।

आम तौर पर मकड़ियों का समागम बड़ा रोमांचक होता है। इनमें नर की स्थिति बड़ी दयनीय होती है तथा सामान्यतया कोई नर जीवन में केवल एक बार ही समागम कर पाता है क्योंकि समागम के तुरंत बाद मादा मकड़ी उग्र हो उठती है और नर के टुकड़े-टुकड़े करके खा जाती है मगर जलीय मकड़ी में ऐसा नहीं होता।

समागम की इच्छुक मादा जल मकड़ी नर को अपने घोंसले में रुकने की अनुमति दे देती है। अब नर और मादा दोनों एक-दूसरे के निकट आ जाते हैं और घोंसले के भीतर समागम करते हैं। समागम समाप्त हो जाने के बाद नर यदि चाहे तो कुछ समय तक मादा के घोंसले में रह सकता है। इसके बाद दोनों एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं।

मादा जल मकड़ी समागम के बाद अपने घोंसले के भीतर ही पचास से लेकर एक सौ तक अंडे देती है। ये अंडे एक रेशमी थैले में भरे होते हैं तथा काफी हल्के होते हैं। हल्के होने के कारण ये घोंसले के ऊपरी भाग में आ जाते हैं। चार सप्ताह के अंदर अंडे परिपक्व होकर फूटते हैं और इनसे छोटे-छोटे बच्चे निकलते हैं। मादा रेशमी थैले से बाहर निकलने में अपने बच्चों की कोई सहायता नहीं करती। बच्चे स्वयं ही रेशमी थैले को फाड़कर बाहर आते हैं किंतु घोंसले के बाहर न जाकर कुछ सप्ताह तक घोंसले के भीतर ही रहते हैं। इस बीच दो बार निर्मोचन होता है।

जल मकड़ी के बच्चे नए जल स्रोत की तलाश में बिखर जाते हैं। अतः इनकी मृत्यु दर अधिक है। इसके साथ ही विभिन्न प्रकार की मछलियां, मेंढक, बैक स्विमर, ड्रैगन फ्लाय और गुबरैले तथा उनके लार्वा एवं अन्य कई जलीय कीड़े-मकोड़े इनका शिकार करते हैं जिससे इनकी संख्या नियंत्रित रहती है। जल मकड़ियां अपनी ही जाति की छोटी और कमजोर जल मकड़ियों को आहार बनाती हैं। अतः तालाबों में इनकी संख्या बढ़ नहीं पाती। (स्रोत फीचर्स)

## अगले अंक में.....

स्रोत सितम्बर 2015

अंक 320

○ बबूल का वैज्ञानिक नाम बदला

○ कहानी रैडॉन की खोज की

○ भारत में बाल पोषण की स्थिति

○ बुढ़ापे का प्रोटीन याददाश्त हर लेता है

○ ऊर्जा चाहिए? एंजाइम की मदद लें

